Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

ममता कालिया जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक परिचय

Dimpal*

Assistant Professor of Hindi, Maharana Pratap Mahila Mahavidyalaya, Bhiwani

सारांश - ममता कालिया का जन्म 2 नवम्बर, 1940 को वृंदावन में हुआ। इनके पिता श्री विधा भूषण अग्रवाल थे। ये पहले अध्ययन में और बाद में आकाशवाणी में कार्यरत रहे। वे अंगेली व हिन्दी साहित्य के विद्वान थे, वे अपनी बेबाक ब्यानबाजी के लिए जाने जाते थे। ममता कालिया की माँ बेहद भोली व शालीन महिला थी। वे हर वक्त गुड़िया की तरह सजी रहती थी। ममता कालिया की शिक्षा दिल्ली, मुंबई, पुणे, नागपुर और इन्दौर शहरों में हुई। इन्होंनं अपनी एम.ए. अंग्रेजी विषय में दिल्ली विश्वविद्यालय से पास की।

----------X----------

साहित्यिक प्रेरणा:

ममता कालिया के पिता आकाशवाणी में अधिकारी थे इसलिए जैनेंद्र से लेकर नये-नये रचनाकारों से उनकी मित्रता थी। मुक्तिबोध से तो ममता जी का बचपन से परिचय था। इस कारण इन साहित्यकारों से सम्पर्क होने के कारण इनका ध्यान बचपन से ही लेखन कार्य में लग गया। इन्होंने 9 वर्ष की आयु में ही अपना लेखन कार्य आरम्भ कर दिया था। इनके पिता स्वयं भी हिन्दी व अंग्रेजी साहित्य के विद्वान थे। ममता के व्यक्तित्व पर इसका भी प्रभा पड़ा। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात ममता जी दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्राध्यापिका के पद पर नियुक्त हुई।

इनका विवाह प्रख्यात रचनाकार श्री रवीन्द्र कालिया से हुआ। इनका यह प्रेम विवाह था। ममता जी जब दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्रध्यापिका थी तो रवीन्द्र जी 'भाषा' के संपादकीय विभाग में कार्य करते थे। इनकी मुलाकात लॉ बोटीम में हुई। बाद में ये दोनों कुतुबमीनार बुद्ध जयंती पार्क कभी हुमायुँ के मकबरे पर मिलने लगे। बाद में रवीन्द्र जी को 'धर्मयुग' में नौकरी मिल गई। ये मुंबई चले गये। इसके कुछ समय पश्चात ममता जी के पिता का तबादला मुंबई में हो गया। वे आकाशवाणी के केन्द्र निदेशक होकर गये थे। उन्हें जो घर मिला था वह रवीन्द्र जी के घर से मात्र एक किलोमीटर दूर था। इनकी घनिष्ठता बढ़ती चली गई व बाद में दोनों ने शादी करने का निश्चय कर लिया। दोनों ने दिल्ली में एक संक्षिप्त समारोह में शादी कर ली। ममता जी शादी के बाद एस.एन.डी.टी. यूनिवर्सिटी में प्रध्यापिका के पद पर नियुक्त हुई। कुछ समय प्श्चात रवीन्द्र जी ने इलाहाबाद में नौकरी कर ली। बाद में ममता जी भी इलाहाबाद के संप्रति महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज में प्राचार्या लग गयी। ये 28 वर्षों से यहाँ कार्यरत है। इनका वैवाहिक जीवन सफल रहा। इनके दो बेटे हैं अनिरूद्ध व प्रबुद्ध। जिन्हें ये प्यार से अन्नू व मन्नू बुलाते हैं।

व्यक्तित्व की विशेषताएँ

ममता कालिया अपने पिता के व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित थी। शादी से पहले उनके पापा ही उनके हीरो हुआ करते थे। 'पापा' शब्द उनका तकिया कलाम हुआ करता था। 'पापा' का जिक्र किये बगैर उनका कोई भी वाक्य पूरा न होता था। रवीन्द्र कालिया के जीवन में प्रवेश के कारण वह भी हैरान थी। पिता व पति के मध्य द्वंद्व को लेकर उन्होंने एक कहानी लिखी जिसका नाम था - 'दो जरूरी चेहरे'। इस कहानी की नायिका भी अपने भाई व प्रेमी के बीच अन्तद्वन्द्व में फँसी है

एक बार ममता जी चंडीगढ़ में एक गोष्ठी में गयी हुई थी। शाम को गोष्ठी खत्म होने पर उन्होंने दिल्ली लौट जाने की इच्छा प्रकट की। मदान साहब ने उनके ठहरने की व्यवस्था लड़कियों के हॉस्टल में की थी, मगर उन्होंने जिद्द पकड़ ली कि 'पापा नाराज होंगे। सुबह मेरी क्लास है, मैं छुट्टी लेकर नहीं आयीं। मेरा दिल्ली पहुंचना जरूरी है। मगर अकेले कैसे जाऊँगी?" बाद में रवीन्द्र जी ममता के साथ गये।

www.ignited.in

ममता जी व रवीन्द्र जी दोनों अलग-अलग प्रदेशों से आये थे। ममता जी का संबंध उत्तर प्रदेश से था व रवीन्द्र जी का पंजाब से। परन्तु ममता जी ने रवीन्द्र जी के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं की थी। उन्हें यह नहीं मालूम था कि रवीन्द्र जी हिन्दू हैं, सिख या ईसाई हैं। उनकी पृष्ठभूमि क्या है व शिक्षा कहाँ तक ग्रहण की है।

ममता जी का आरंभ से ही साहित्य के प्रति रूझान रहा। आरंभ में उन्होंने कहानियाँ कम कविता ज्यादा लिखी। उस समय उन्होंने 'बोल्ड' किस्म की कविताएँ लिखी। उनकी कविताओं ने तमाम लेखकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। प्रारम्भ की एक कविता तो डॉ. रघुवंश अथवा लक्ष्मीकांत वर्मा ने प्रकाशित की।

यह कविता थी -

'प्यार शब्द घिसते-घिसते चपटा हो गया है

अब

हमारी समझ में सहवास आता है।

उनकी यह कविता लम्बे समय तक चर्चा का विषय बनी रही।

ममता जी से रवीन्द्र जी की मुलाकात दिल्ली के लॉ बोटीम में हुई थी। ममता जी उस समय दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्राध्यापिका थी और रवीन्द्र जी 'भाषा' में संपादकीय विभाग में कार्य करते थे। बाद में दोनों साथ में शामें बितानी लगे। दोनों छुट्टी वाले दिन कभी कुतुबमीनार, कभी बुद्ध जयंती, कभी हुमायूँ के मकबरे पर बैठे रहते। दोनों साथ में ही भोजन करते थे।

रवीन्द्र जी की नौकरी जब 'धर्मयुग' में लग गयी तब उन्हें मुंबई जाना पड़ा। उसक समय रवीन्द्र जी को ममता जी से कम वेतन मिलता था परन्तु ममता जी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मुंबई जाने वाली गाड़ी का आरक्षण ममत जी ने करवाया ।

रवीन्द्र जी के मुंबई आने के बाद ममता जी के पिता का तबादला भी मुंबई हो गया। ममता जी व रवीन्द्र जी के घर मात्र 1 किलोमीटर का फासला होगा। ममता जी मुंबई छुट्टियों में आई तो रवीन्द्र जी की जीवन शैली को देखकर हैरान रह गई। सी फेस फलैट, खानसामा, बावर्ची आदि की उचित व्यवस्था थी। घर भी साफ सुथरा था। यह सब ओदी के प्रभाव के कारण था। ओदी से ममता जी की एक दिन भी नहीं निभी। दोनों एक दूसरे को 'फ्रॉड' कहने लगे। ओदी के धर में अक्सर पार्टियाँ चलती रहती थी जिनमें सुन्दर लड़कियाँ आती थी। इनके बीच ममता जी रवीन्द्र जी को देखकर हट जाती। उन्हें लगता कि रवीन्द्र जी भी एक खतरनाक राह पर चल रहे हैं। इसी कारण ममता जी ने दिल्ली की नौकरी छोड़ दी व मुंबई जा गयी। उन्होंने जल्द ही रवीन्द्र जी से शादी कर जी।

शादी के बाद दोनों शीतल देवी टेम्पिल रोड़ पर स्थित चैथी मंजिल के एक फलैट में रहने लगे। उस समय रवीन्द्र जी के पास न कोई बिस्तर थ, न बाल्टी, न मग, गैस न बर्तन थे। परन्तु बाद में जब रवीन्द्र जी घर लौटे तो देखा काफी व्यवस्थित लग रहा था घर। ममता जी ने बिस्तर, कुकिंग गैस, बर्तन, तवा, पतीला, बेलन आदि चीजें खरीद ती थी।

रसोई के कार्य में ममता जी अकुशल थी। शादी के कुछ समय बाद तक ममता जी ने व्यंजन पुस्तिका पढ़-पढ़ कर खाना बनाया। एक दिन ममता जी ने तीन-चार सब्जियां, चटनी, आचार आदि बनाया। रवीन्द्र जी केवल तीनचार कौर में सब सब्जियां चट कर गये। ममता जी ने जितनी तरकारी परोसी थी उतनी तो रवीन्द्र जी चटनी खा जाते थे। ममता जी का चेहरा सुर्ख हो गया था। मगर ममता जी को ज्यादा रसोई का कार्य नहीं करना पड़ा शीघ्र ही वे एस.एन.डी.टी. यूनीवर्सिटी में प्राध्यापिका नियुक्त हुई। रसोई एक दक्षिण भारतीय बावर्ची ने सम्भाल ली। ममता जी को आज भी रसोई में जाना पसन्द नहीं। आज जब उनका मन पिट्टी भर कर कचैड़ी खाने का हो रहा हो या कोई भूला-बिसरा व्यजंन याद आ रहा हो तो तभी रसोई में जाती हैं।

ममता जी बहुत ही घरेलू महिला हैं। जातीय संस्कारों में उनका अटूट विश्वास है। वह एक औसत भारतीय महिला की भांति रहती है। शादी के बाद वह हर तीज-त्यौहार पर व्रत करती थी। अब वह पहले जैसे उपवास नहीं करती। मगर जब अन्य सहकर्मी महिलाओं को यह व्रत उपवास करते देखती है तो इनका चेहरा देखने लायक होता है । इन्हें लगता है कि इनसे कोई महाभूल हो गयी है

ममता जी की ईश्वर में गहरी आस्था है। वे व्रत-त्यौहारों को पारम्परिक रूप से मनाना पसंद करती हैं। ये रोज सुबह पूजा करती है। ममता जी को सजने का बहुत शौक था। उन्हें सिंदूर लगाना, चूड़ी पहनना, बिन्दी लगाना प्रिय लगता था। वह पारम्परिक जीवन शैली से प्रेम करती थी। रवायतें उन्हें सदा आकर्षित करती रही हैं ।शादी के बाद ममता जी को खूब सज-धज के सिनेमा देखने का शौक था। रवीन्द्र जी कहते थे कि फिल्म तो घर में भी देखी जा सकती है, परन्तु ममता जी को थियेटर में जाकर फिल्म देखने का शौक था। शादी के बाद ममता जी रवीन्द्र जी को दफतर जाने से पहले कोट पहनाती, टाई का गाँठ लगाती थी। अगर रवीन्द्र जी वाश बेसिन में मुँह धोते थे तो, वे तौलिया लेकर खड़ी रहती। जब दफतर के लिए

www.ignited.in

निकलते तो वे उनका हाथ चूम लेती ।जब-जब रवीन्द्र जी के जीवन में जोखिम आया मतता जी एक मजबूत चट्टान की तरह खड़ी रही। रवीन्द्र जी के कारण उन्होंने अनेक संघर्ष किये। कई प्रकार के कष्ट झेले। उन्होंने अपना भविष्य भी पति के कारण दांव पर लगाया। कई नौकरियाँ छोड़ी। बम्बई का धक्का मुक्की का जीवन रवीन्द्र जी को पसन्द नहीं था। लोकल बसों के धक्के, बाजार में धक्के, ये सब रवीन्द्र जी को परेशान करते थे। सबसे ज्यादा अप्रिय तो रवीन्द्र जी को दफतर का माहौल लगता था। घर लौटकर उन्हें लगता था कि जैसे किसी यात्रा से आये हों। एक दिन घर लौटकर उन्होंने ममत जी से कह दिया कि कोई स्वाभिमानी व्यक्ति इस दफतर में काम नहीं कर सकता है। उनकी बात सुनते ही ममत ही ने उन्हें इस्तीफा देने की सलाह दे दी। वे बेहद हैरान हुए क्योंकि आज के समय में पत्नियाँ पति से ज्यादा प्यार पति की नौकरी से करती हैं। इसके तुरन्त बाद रात ग्यारह बजे ममता जी ने उन्हें दफतर रवाना कर दिया ताकि वे बता सकें कि वे अब वे यह नौकरी नहीं करेंगे।

रवीन्द्र जी ममता जी को मुंबई हॉस्टल में भर्ती कराके इलाहाबाद चले आये। इलाहाबाद में उनका ऐसा मन रमा कि वे ममता जी को पत्र लिखना भूल गये। जब बाद में ममता जी को पता चला कि वे अश्क जी के यहाँ रूके हैं तो वे काफी परेशान हो गयीं। शादी की सालगिरह पर भी उन्होंने ममता जी को कोई पत्र नहीं लिखा। ममता जी का धैर्य टूट गया। अश्क जी उस समय तलाक दिलवाने में बहुत प्रसिद्ध हो गये थे। ममता जी को चिन्ता हो गयी कि वह दोनों का तलाक दिलवाकर रहेंगे। ममता जी ने रवीन्द्र जी को एक पत्र में लिख दिया कि चलो जो होना था हो गया, मेरे भागय में यही लिखा था वगैरह-वगैरह, यह सब पढ़कर रवीन्द्र जी परेशान हो गये। अश्क जी ने उनकी परेशानी समझकर ममता जी को पति-पत्नी के संबंधों की विस्तार से व्याख्या लिख डाली। ममता पत्र पढ़कर इतनी चिन्तित हो गयी कि अगले महीने नौकरी छोड़कर इलाहाबाद आ गयी

शादी के आरम्भ में ममता जी बच्चों की तरह चंचल स्वभाव की थी। मजाक की बातों को भी गंभीरता से ले लेती थी। मगर बाद में उन्हें पता चल गया कि रवीन्द्र जी का इरादा नेक रहता है।

म्मती जी के दोनों बेटे सिजेरियन ऑपरेशन से पैदा हुए। इनके जन्म के समय ममता जी को अनेक कष्ट उठाने पड़े। दूसरे बेटे के जन्म के समय ममता जी बहुत बीमार पड़ गयी। ग्लूकोज व खून की कई बोतलें उन्हें चढ़ानी पड़ी। एक दिन उन्होकंने रवीन्द्र जी का हाथ थामकर कहा, 'रवि, एक वादा करो।'

'क्या?' रवीन्द्र जी ने कहा।

'अगर मैं मर गयी तो तुम दूसरी शादी मत करना।'

इस पर रवीन्द्र जी ने कहा, 'अगर मैं मर जाऊँ तो तुम दूसरी शादी जरूर कर लेना।'

इस बात पर ममता जी हंसने लगी।

ममता जी को परम्परागत जीवन शैली से प्या है। एक बार ममता जी ने करवा चैथ का व्रत किया। रवीन्द्र जी ने उन्हें खुशवंत सिंह का एक लतीफा सुनाया।

'एक दम्पति का आपस में झगड़ा हो गया मगर जब करवाचैथ का त्यौहार आया तो पत्नी जी न सिर्फ व्रत किया, शाम को मंदिर जाकर पूजा करने के इरादे से जी भर श्रृंगार किया और सबसे अच्छी साड़ी पहनी।

पति ने पूछा, 'आज दल्हन की तरह सजकर कहाँ जा रही हो?'

पत्नी ने कहा, 'तेरा ही स्यापा करने मंदिर जा रही हूँ।

यह सुनकर ममती जी रवीन्द्र जी से नाराज हो गयी। उन्होंने कई दिन रवीन्द्र जी से बात नहीं की।

शादी के कई साल बाद ममता जी को लगा कि उनका कोई वैसा संयुक्त चित्र नहीं है जो लोगों के घर कार्निश पर सजाया जाता है। वे रवीन्द्र जी को अनुरोध करके स्टूडियो ले गयी व वहाँ चित्र खिंचवाया।

ममता जी भुलक्कड़ स्वभाव की हैं। उनकी बहुत सी चीजें गुम हो जाती हैं। कभी रात को वे कहानी लिखकर सोती हैं तो सुबह तक गायब हो जाती हैं। घर में कहानी ढूंढी जाती है। सभी पुराने अखबार खोल-खोलकर देखे जाते हैं। बड़ा लड़का कहानी को बेडरूम में खोजता है व छोटा रसोघर में। बाद में कॉलेज में भी कहानी ढूंढी जाती है पर कहानी का कुछ अता पता नहीं चलता। बाद में कहानी उन्हीं की अलमारी में साड़ियों के बीच मिलती है।

एक बार उनकी उपन्यास की डायरी खो गयी। पांच-छह वर्ष बाद अचानक वह डायरी उनके कागजों में मिली।

कलेज से आते समय दुकान पर सामान खरीदते समय वह अपना पर्स और कागजात वहीं दुकान पर भूल जाती है। इस कारण बाद में किसी ओर को भेजकर पर्स व कागजात मंगवाने पड़ते हैं। मगर उनकी खोयी चीज मिल अवश्य जाती है। साल में वह घड़ी, चश्मा, जूते-चप्पल तक खो देती है।

www.ignited.in

शादी के बाद ममता जी व रवीन्द्र जी कलकत्ता से मुंबई लौट रहे थे। सुबह ममता जी ने रवीन्द्र जी को जगाया और कहा कि उनकी अंगूठी खो गयी है। जब वह टॉलेट गयी थी तब से वह अंगूठी गुम है। गाड़ी जंगल में सिग्नल की प्रतीक्षा में रूकी खड़ी थी। रवीन्द्र जी गाड़ी से नीचे उतरकर देखते हैं कि वाशबेसिन के नीचे पत्थरों के बीच में अंगूठी पड़ी थी। उन्होंने जल्दी से हाथ बढ़ाकर अंगूठी को उठा लिया। टिकट येकर टिकट मांगेगा तो ममता ली का टिकट गुम हो जायेगा और बरवों से खोया हुआ पैन मिल जायेगा। बाद में पैन के खो जाने पर टिकट मिल जाता है।

ममता जी दिल्ली या किसी अन्य महानगर में जाती हैं तो बहुत बार वे स्टेशन पर या भीड़ वाली मार्केट में पैसे खो देती हैं। इस कारण कई बार टैक्सी का किराया घर पहुंचकर अदा किया जाता है। इस समस्या के हल के लिए अब पैसे बच्चों की जेब में डाल दिये जाते हैं।

एक दिन तो ममता जी स्वयं ही गुम हो गयी थी। कालेज में देरी होने के कारण रवीन्द्र जी ने सोचा कि वे उन्हें स्कूटर पर छोड़ आते हैं। रास्ते भर वे उनसे बातें करते रहे। कॉलेज पहुंचकर वे परेशान हो जाते हैं क्योंकि ममता जी सीट से गायब है। वे घबरा जाते हैं कि कहीं ममता जी स्कूटर पर से गिर तो नहीं गयी। कहीं उनका अपहरण तो नहीं हो गया है। रास्ते में देखते हुए जब रवीन्द्र जी घर पहुंचकर देखते हैं कि ममता जी लस्टम-पस्टम चली आ रही है। पता चलता है कि वे स्कूटर पर सवार ही नहीं हुई थी। उन्होंने यह सोचकर आवाज नहीं दी कि रवीन्द्र जी नुक्कड़ पर प्रेशर चेक करवाने के कारण जल्दी चले गये।

ममता जी के साथ रहते हुए उनके पति रवीन्द्र जी को भी भूल जाने की आदत हो गयी है। एक बार दोनों इलाहाबाद से मुंबई जा रहे थे, रास्ते में गाड़ी किसी मामूली स्टेशन पर रूकी। दोनों लम्बी यात्रा से तंग आकर गाड़ी से नीचे उतर गये। प्लेटफार्म पर बरगद के पेड़ की मुंडेर पर बैठकर बातें करने लगे। तभी गाड़ी चल पड़ी तभी किसी ने गाड़ी रूकवाई। तब जाकर ये लोग रेल में सवार हुए।

ग्रन्थ सूची

ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002, संस्करण-2008

शशिबाला शर्मा मुक्तिबोध की कविता में यथार्थबोध संस्करण प्रथम प्रकाशन - प्रवीण शर्मा, अशोक विहार, दिल्ली-110052

राजकुमार सैनी यथार्थवाद और सौन्दर्य शास्त्र प्रकाशक - टाइम बुक्स, 512-बी, गली न0 1, विश्वास नगर, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110032 मुद्रक कम्पीटेंट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

श्री नारायण सिंह बीसवीं शताब्दी, हिन्दी उपन्यास: नए दो पहलू लोकवाणी प्रकाशन, डी-15, सिनेमा ब्लाक, कृष्ण नगर, दिल्ली-110051, प्रथम संस्करण, 1976

Corresponding Author

Dimpal*

Assistant Professor of Hindi, Maharana Pratap Mahila Mahavidyalaya, Bhiwani